विचार बिन्दु

आत्मा को न शस्त्र काट सकता है, न आग जला सकती है, न जल भिगो सकता है और न हवा सुखा सकती है। –भगवत गीता

पड़ताल हमारी खुशहाली की!

सन् 2024 की विश्व खुशहाली रिपोर्ट आ गई है। 158 पेज का सुमुद्रित दस्तावेज़ मेरे सामने है। यह रिपोर्ट गैलप, ऑक्सफोर्ड वेल बीइंग रिसर्च सेण्टर, संयुक्त राष्ट्र सस्टेनेबल डेवलपमेण्ट सॉल्यूशंस नेटवर्क और वर्ल्ड हैप्पीनेस रिपोर्ट के संपादक मंडल का संयुक्त उपक्रम है। रिपोर्ट के अनुसार शीर्ष दस स्थानों पर पिछली सूची वाले देश ही अब भी काबिज़ हैं। पहले स्थान पर फिनलैंड है और उससे बहुत कम अंतर से, दूसरे स्थान पर है डेनमार्क। पांचों नॉर्डिक देश (जिन्हें नॉर्डिक्स या नॉर्डेन के नाम से भी जाना जाता है; जिसका शाब्दिक अर्थ उत्तर) शीर्ष दस खुशहाल देशों की सूची में उपस्थित हैं। ये पांच देश हैं:– डेनमार्क, नॉर्वे, स्वीडन, फ़िनलैंड और आइसलैंड। लेकिन ग्यारहवें से बीसवें स्थान तक वाली सूची में कुछ फेरबदल हुआ है। पूर्वी यूरोप के कुछ देश जैसे चेकिया, लिथुआनिया और स्लोवानिया ने जहां अपनी स्थिति सुधारी है, वहीं इनके ऊपर आ जाने के कारण संयुक्त राज्य अमरीका और जर्मनी को 23 वें और 24 वें स्थान पर उतरना पड़ा है। 2012 के बाद से, जब से यह रिपोर्ट ज़ारी होने लगी है, यह पहली बार है कि संयुक्त राज्य अमरीका पहले बीस देशों की सूची से बाहर हुआ है।

कुल 143 देशों की इस सूची में भारत पिछले बरस की तरह इस बार भी 126 वें स्थान पर ही है। कुछ अन्य देश जिनमें हमारी ज़्यादा रुचि रहती है, उनमें से चीन 60 वें, नेपाल 93 वें, पाकिस्तान 108 वें, म्यांमार 118 वें, श्रीलंका 128 वें और बांगलादेश 129 वें स्थान पर है। सूची का समापन अफ़गानिस्तान से होता है।

जब भी यह सूची आती है, हमारी खुशहाली कुछ और घट जाती है। लेकिन कुछ लोग हैं जो इस सूची की प्रामाणिकता, और उन मानदण्डों पर सवाल उठाते हैं जिनके आधार पर यह सूची तैयार की जाती है। उनका तर्क यह होता है कि यह सूची पाश्चात्य मानदण्डों के आधार पर तैयार की जाती है, इसलिए हम इसमें इतना नीचे आते हैं। मेरा अपना यह मानना है कि अध्ययन करने वालों की मंशा पर सवाल उठाने की बजाय हमें आत्मावलोकन करने और अपनी स्थितियां सुधारने पर अधिक ज़ोर देना चाहिए। इस बात को लेकर भी सवाल उठाए जाते हैं कि इस तरह के अध्ययनों की उपादेयता क्या है? अध्ययन करने वालों का कहना है कि उनके इस श्रम से विभिन्न देशों के नीति निर्माताओं को अपनी नीतियां तैयार करने और प्राथमिकताओं का निर्धारण करने में सहायता मिलती है। यह बात तर्कपूर्ण भी लगती है।

इस बार की रिपोर्ट में एक बहुत बड़ा बदलाव हुआ है। बदलाव यह कि जहां पहले देशों को उनकी समग्र खुशहाली के अनुसार स्थान दिया जाता था, इस बार अलग-अलग आयु समूहों की खुशहाली का भी आकलन किया गया है और यह देखना बहुत रोचक है कि अलग-अलग समूहों की खुशहाली में बहुत अंतर है। यही देखें कि जहां तक तीस बरस से कम आयु समूह की बात है लिथुआनिया शीर्ष पर है, लेकिन साठ और उससे ऊपर के आयु समूह की खुशहाली के हिसाब से डेनमार्क शीर्ष पर है। एक रोचक बात यह है कि सभी देशों को मिलाकर देखने पर हम पाते हैं कि 1980 के बाद जन्मे लोगों की तुलना में वे लोग ज़्यादा खुशहाल हैं जिनका जन्म 1960 से पहले हुआ था। इसी तरह एक और रोचक बात यह है कि जहां मिलेनियल्स (जिन्हें जेन वाय भी कहा जाता है। वे लोग जिनका जन्म 1981 से 1996 के बीच हुआ) के जीवन की खुशी उनकी उम्र के हर बरस के साथ घटती जाती है, वहींबूमर्स (जिनका जन्म 1945 से 1965 के बीच हुआ) के मामले में इसका उलट होता है। उनके जीवन का संतोष उम्र के हर बरस के साथ बढ जाता है।

जहां तक युवाओं की बात है, एक यूरोपीय देश लिथुआनिया के युवा दुनिया में सबसे अधिक खुश बताए गए हैं। याद रहे कि 11 मार्च 1990 को लिथुआनिया सोवियत संघ से टूटकर अलग हुआ था और लगभग साढे तीन दशकों में इसने अपने युवाओं को दुनिया का सबसे बडा खुशहाल समूह बना देने का चमत्कार किया है। वैसे इस देश की आबादी बहुत कम है। मात्र 27 लाख। लेकिन जानकार बताते हैं कि इस देश ने शिक्षा पर सबसे अधिक ध्यान दिया और शिक्षितों को रोज़गार दिया। अंधा क्या चाहे? दो आंखें! इस देश की समृद्धि और युवाओं की खुशहाली का ग्राफ़ लगातार ऊपर गया है। सरकार ने ऐसी व्यवस्था की है कि अगर किसी के पास पर्याप्त वित्तीय संसाधन न हो तब भी उसे शिक्षा वे वंचित नहीं रहना पडता है। इसी व्यवस्था का सुपरिणाम है कि इस देश के 57 प्रतिशत युवाओं के पास विश्वविद्यालय की डिग्री है। यहीं यह भी याद कर लिया जाए कि यूरोपीय यूनियन में केवल 43 प्रतिशत के पास ही विश्वविद्यालय की डिग्री है। विश्वविद्यालय से पढकर निकलने वाले युवाओं पर किसी तरह के ऋण का कोई बोझा नहीं होता है और उनके लिए रोज़गार के इतने अवसर होते हैं कि वे बहुत आसानी से अपना मनपसंद काम चुन सकते हैं। ऐसा इसलिए भी हुआ है कि सरकार ने स्टार्टअप्स को खुला समर्थन व प्रोत्साहन दिया है। लिथुआनिया में वेतन की स्थिति भी बहुत अच्छी है और न्यूनतम वेतन भी पर्याप्त व सम्मानजनक है।

इस बार की रिपोर्ट में एक बहुत बड़ा बदलाव हुआ है। बदलाव यह कि जहां पहले देशों को उनकी समग्र खुशहाली के अनुसार स्थान दिया जाता था, इस बार अलग-अलग आयु समूहों की खुशहाली का भी आकलन किया गया है और यह देखना बहुत रोचक है कि अलग-अलग समूहों की खुशहाली में बहुत अंतर है।

इस रिपोर्ट में एक पूरा अध्याय (अध्याय पांच) भारत को समर्पित है। इस अध्याय का शीर्षक है: 'डिफरेंसेस इन लाइफ़ सेटिस्फेक्शन अमंग ओल्डर एडल्ट्स इन इण्डिया'। इस अध्याय में यह रोचक निष्कर्ष है कि भारत में ज्यों-ज्यों व्यक्ति की उम्र बढती है उसकी जीवन संतुष्टि भी बढती जाती है। यह निष्कर्ष इस धारणा को तोडता है कि उम्र के साथ खुशियां केवल उच्च आय वर्ग वाले देशों में ही बढती हैं। लेकिन भारत में भी यह बात देखी गई है कि बढी उम्र की स्त्रियां बढी उम्र के पुरुषों की तुलना में कम खुश हैं। जहां तक पुरुषों की बात है, सेकण्डरी या इससे अधिक शिक्षा पाए हुए और सवर्ण जातियों के पुरुष अनुसूचित जाति या जन जाति के औपचारिक शिक्षा विहीन वृद्धों की तुलना में अधिक प्रसन्न हैं। इस रिपोर्ट की एक महत्वपूर्ण बात यह है कि यहां भारत में खुशहाली और जाति के पारस्परिक रिश्तों को भी खंगाला गया है। रिपोर्ट में कहा गया है कि आपकी जाति विविध संसाधनों -जिनमें ज्ञान, सत्ता, प्रतिष्ठा और मुख्यधारा के सामाजिक रिश्ते शामिल हैं-तक आपकी पहुंच को निर्धारित करती है। ज़ाहिर है कि ये संसाधन उच्च जाति वालों को अधिक सुलभ होते हैं और उम्र के बाद वाले पडाव में इन तक आपकी पहुंच आपकी जाति से और अधिक प्रभावित होती है। इस अध्ययन से यह बात भी सामने आई कि बढी उम्र के भारतीयों में अनुसूचित जाति व जनजाति के वृद्धों की तुलना में उनसे इतर जातियों के, अर्थात सवर्ण जातियों के लोग अधिक खुशहाल हैं। रिपोर्ट यह भी बताती है कि इन दोनों समूहों की खुशहाली के अंतर पर शिक्षा का भी गहरा असर है। यह स्वाभाविक भी है। शिक्षा आपके लिए बहुत सारेबंद दरवाज़े खोलती है। रिपोर्ट में एक बहुत ख़ास बात यह बताई गई है कि उन लोगों की तुलना में जिन्हें अपने जीवन काल में कभी भी जाति की वजह से किसी भेदभाव या अपमान का सामना करना पडा, वे लोग अधिक प्रसन्न पाए गए हैं जिन्हें ऐसा कटु अनुभव कभी नहीं हुआ। स्मृतियां भी आपकी अनुभूतियों को प्रभावित करती हैं।

जैसा मैंने पहले भी कहा, इस रिपोर्ट के बारे में जानने के बाद हमारी एक प्रतिक्रिया तो यह हो सकती है कि हम इसे दुर्भावनापूर्ण बताते हुए सिरे से खारिज कर दें। आम तौर पर आधिकारिक सरकारी प्रतिक्रिया ऐसी ही होती है। यह शायद सरकारों की मज़बूरी भी होती है। वे भला इस बात को कैसे स्वीकार कर सकती हैं कि उनके महान शासन में जनता सुखी नहीं है। लेकिन अगर आप आम आदमी के नज़रिये से देखेंगे तो ज़रूर ही पाएंगे कि हमारे यहां हालात खुशहाली के नहीं हैं। क्या आपको समय पर और आसानी से चिकित्सा सुविधा मिल जाती है? क्या आपको शिक्षा के समुचित अवसर उतने संसाधनों में सुलभ हैं जो आपकी आर्थिक सीमा में हैं? क्या आपको शुद्ध पेय जल मिल रहा है? क्या आपके यहां सडकों की हालत ठीक है? अगर आपको किसी सरकारी दफ्तर में कोई काम पड जाता है तो वहां आपके साथ सम्मानजनक बर्ताव होता है? क्या कभी आपको अपने निर्वाचित प्रतिनिधि से बात करने की ज़रूरत पडी है? अगर हां, तो क्या उसने आपको समुचित सम्मन देकर आपकी बात सुनी है? ऐसे बहुत सारे सवाल हैं। इन्हें आप अपने आप से पूछें और फिर बताएं कि आप कितने खुशहाल हैं! इसे छोडिये। मूल बात पर लौटता हूं। मुझे लगता है कि एक विवेकपूर्ण और तर्कसंगत प्रतिक्रिया यह हो सकती है कि इस तरह की रिपोर्ट्स को गंभीरता से लिया जाए और उसमें जो नकारात्मक बातें कही गई हैं उनकी समुचित पडताल कर ऐसे प्रयास किए जाएं कि अगली रिपोर्ट में किसी को उन बातों को दुहराने की ज़रूरत ही न रह जाए। अगर कुछ देश इन रिपोर्ट्स में अपनी स्थिति बेहतर बना सके हैं और हम जहां थे वहीं टिके हुए हैं तो हमें अपनी क्रियाशीलता पर, अपनी रीति नीतियों पर, अपनी कार्य योजनाओं पर, अपनी प्राथमिकताओं के निर्धारण पर पुनर्विचार करना चाहिए!

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

सड़क निर्माण की अवधि समाप्त होने के पांच माह बाद भी काम अधूरा

पावटा से कुनेड मार्ग पर संवेदक द्वारा धीमी गति से कार्य किया जा रहा है

- ग्रामीण, राहगीरों एवं वाहन चालकों को परेशानी से गुजरना पड़ रहा है

संवेदक द्वारा अधूरे सड़क मार्ग कार्य को छोड़ देने से लोग परेशान हो रहे हैं।

पावटा, (निसं)। कस्बे के पावटा से कुनेड मार्ग का नवीनीकरण कार्य विभागीय उच्चाधिकारियों की अनदेखी व संवेदक द्वारा कार्य के नहीं करने से सड़क निर्माण की अवधि समाप्त होने के पांच माह बाद भी अधूरा पड़ा हुआ है। संवेदक द्वारा सड़क मार्ग पर धीमी गति से कार्य किया जा रहा है। इससे क्षेत्र के ग्रामीण, राहगीरों एवं वाहन चालकों को परेशानी से गुजरना पड़ रहा है।

पावटा से कुनेड मार्ग तक दो किमी सड़क मार्ग पर सड़क निर्माण की अवधि के चार से पांच माह बाद निर्माण कार्य शुरू हुआ था, लेकिन सड़क निर्माण की अवधि समाप्त होने के पांच माह बाद भी अभी तक पूरा होने का नाम नहीं ले रहा है। विभागीय अधिकारियों द्वारा ध्यान नहीं दिये जाने की वजह से निर्माण अटकता ही जा रहा है। संवेदक द्वारा अधूरे सड़क मार्ग को छोड़ देने से लोग खराब सड़क को झेल रहे हैं।

इस मार्ग से जो भी गुजरता वह सा.नि.वि. के अधिकारी व नेताओं को कोसते हुए गुजरता है। अधूरे पडे निर्माण पर वाहनों से उड़ रहे धूल के गुबार सांस की बीमारी बढ़ा रहे हैं। पावटा से कुनेड मार्ग तक दो किमी लंबे मार्ग सहित कई स्थानों पर टूट रही सड़क पर किसी वाहन के पीछे चलना बीमारियों को न्यौता देने के बराबर साबित हो रहा है। साफ-सफाई नहीं होने से सड़क पर जमा धूल वाहन चलने पर आसपास के मकानों में भी जम जाती है। ऐसे में सड़क पर चलना तो क्या किनारे के आसपास रहना भी मुसीबत भरा साबित हो रहा है।

उल्लेखनीय है कि पावटा से कुनेड मार्ग तक 80 लाख की लागत से 2 किमी लंबी सड़क निर्माण के लिए 16 जुलाई 2023 में निर्माण कार्य शुरू करने के आदेश जारी हुए थे। 16 दिसबर 2023 को कार्य को भी संवेदक को पूरा करना था, लेकिन अभी तक कार्य पूरा नहीं हुआ है। पावटा से कुनेड मार्ग तक 80 लाख की लागत से दो किमी लंबी सड़क निर्माण कार्य में शुरुआत से संवेदक की लापरवाही रहने के कारण कार्य धीमी गति से किया जा रहा है।

जस्सूजी का खेड़ा व गोधपुरिया की सरकारी भूमि से हजारों टन ग्रेवल पत्थर का अवैध खनन किया

काछोला क्षेत्र में ग्रेवल पत्थर का अवैध खनन कर परिवहन करते चार ट्रैक्टर-ट्रॉली जब्त

- ग्रामीणों ने आरोप लगाया कि सरथला इलाके में लगी दो ग्राइंडर की फैक्ट्रियों में अवैध खनन के मिनरल को ग्राइंडिंग कर कई राज्यों में भेजा जा रहा है

काछोला पुलिस ने अवैध खनन का ग्रेवल पत्थर परिवहन करने के मामले में ट्रैक्टर-ट्रॉली जब्त किये।

मांडलगढ़, (निसं)। मांडलगढ़ के जस्सूजी का खेड़ा और भग्गुनगर (जहाजपुर) पंचायत क्षेत्र के गोधपुरिया गांव की सरकारी भूमि में पिछले कई दिनों से खनन माफिया द्वारा ग्रेवल, पत्थर का अवैध खनन धड़ल्ले से किया जा रहा था। मौक़े पर हजारों टन ग्रेवल पत्थर का खनन के बड़े-बड़े गड्ढे नजर आ रहे हैं, लेकिन राजस्व, खनिज व पंचायत विभाग ने खनन माफिया पर कोई कार्रवाई नहीं की है। इस मामले में काछोला थाना पुलिस ने बीती रात अवैध ग्रेवल पत्थर परिवहन के मामले में चार ट्रैक्टर-ट्रॉली को जब्त किया है और खनिज विभाग को बुलाकर वाहनधारियों के खिलाफ केस दर्ज कराया।

जस्सूजी का खेड़ा पंचायत क्षेत्र मिनरल के बगतपुरा के ग्रामीणों ने आरोप लगाया कि सरथला इलाके में लगी दो ग्राइंडर की फैक्ट्रियों में अवैध खनन के मिनरल को ग्राइंडिंग कर कई राज्यों में भेजा जा रहा है। फैक्ट्री संचालक और खनन माफिया की प्रशासन से सांठ-गांठ के चलते लम्बे समय से सरकारी भूमि में पड़े पैमाने पर अवैध खनन का सिलसिला बदस्तूर जारी है। पिछले दिनों भी ग्रामीणों की शिकायत पर खजूरी (जहाजपुर) के तहसीलदार ने ग्रेवल मिट्टी परिवहन करते खनन माफिया के एक डम्पर को जब्त कर गोधपुरिया से जब्त किया और काछोला थाना पुलिस को सौंपा था। उस दौरान भी कार्रवाई की भनक लगने पर मौके से जेसीबी मशीन और अन्य डम्पर फरार हो गए थे। गोधपुरिया और निकट के बगतपुरा के ग्रामीणों का आरोप है काछोला में करीब 8-10 ग्राइंडिंग फैक्ट्रियां हैं जो कई दिनों से बंद पड़ी है, लेकिन सरथला की दो ग्राइंडिंग फैक्ट्रियों के संचालकों द्वारा खनन माफिया से सैकड़ों बीघा सरकारी भूमि में अवैध खनन कराकर सरकार को राजस्व का चूना लगाया जा रहा है। ग्रामीणों ने कई बार प्रशासन के जिम्मेदारों को शिकायत भी की, लेकिन कोई सुनवाई नहीं हो रही थी।

ग्रामीणों का आरोप है कि कभी रात में तो कभी दिन में खनन माफिया द्वारा भारी भरकम मशीनों से अवैध खनन कर डम्पर और ट्रैक्टर ट्रॉलियों में परिवहन कर ग्राइंडिंग फैक्ट्रियों में ग्रेवल मिट्टी पत्थर को ले जाते हैं और वहां ग्राइंडिंग कर पाउडर के बैग तैयार कर ट्रकों में भरकर अन्य राज्यों में भेजा जाता है, जिससे सरकार को लाखों के राजस्व का चूना लगाया जा रहा है। फैक्ट्री संचालकों द्वारा तथा कथित रवन्ना लाकर अवैध खनन पर पर्दा डालने का खेल भी खेला जा रहा है। वहीं बिल्टी और बिल में अंडरलोड बताकर मिट्टी के कट्टों को ट्रकों में ओवरलोड भर कर अन्य राज्यों में परिवहन किया जाता है, जिससे उक्त गड़बड़झाले से बचाव हो जाता है। मिली जानकारी के मुताबिक सरथला पंचायत में एक ही लाइसेंस पर दो ग्राइंडिंग फैक्ट्रियां चल रही है, लेकिन फेक्ट्री संचालकों और जिम्मेदारों की मिलीभगत के चलते कोई भी कार्रवाई अभी तक नहीं की जा सकी है।

काछोला थाने के सहायक उप निरीक्षक ने बताया कि गश्त के दौरान काछोला बाईपास सड़क पर कांटे से तुलाई कर जा रहे चार ट्रैक्टर-ट्रॉली को रोका गया और जांच की गई। इस दौरान चालक ट्रैक्टर छोड़ कर भाग गए। चारों ट्रैक्टर-ट्रॉली में अवैध खनन का ग्रेवल पत्थर भरा होने पर थाने लाकर जब्त किया है। मामला दर्ज कर चालकों की तलाश और कार्रवाई की जा रही है।

वहीं प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक मौक़े पर 6 ट्रैक्टर थे, जिसमें 2 ट्रैक्टर किसी प्रभावशाली के होने से भगा ले गए, जिन्हें पुलिस ने डिटेन नहीं किया है। खनिज विभाग चारों ट्रैक्टर-ट्रॉली से करीब 1.50 लाख की जुर्माना राशि वसूल करेगा।

ट्यूबवेल की बिजली सप्लाई चालू नहीं होने से किसानों में आक्रोश

किसानों ने बछरारा जीएसएस पर धरना दिया, कर्मचारी को बंधक बनाया

- ट्यूबवेल की विद्युत सप्लाई बंद होने से किसानों की फसलें जल रही है, विद्युत निगम अधिकारी उनकी समस्या को हल करने को लेकर गंभीर नहीं है
- विद्युत निगम के एईएन ने तीन दिन में विद्युत सप्लाई सुचारु करने का आश्वासन दिया, इस पर किसानों ने सहमति जताने पर धरना समाप्त कर दिया

राजियासर, (निसं)। देईदासपुरा ग्राम पंचायत के गांव बछरारा, देईदासपुरा व कोनपालसर में ट्यूबवेल की बिजली सप्लाई चालू नहीं होने से आक्रोशित किसानों ने सुबह विद्युत निगम के अधिकारियों के खिलाफ लापरवाही तथा अधिकारियों की ओर से किसानों की समस्या की सुनवाई नहीं करने पर बछरारा जीएसएस पर धरना लगा दिया। विद्युत निगम अधिकारियों पर लापरवाही का आरोप लगाते हुए किसानों ने कहा कि कुछ दिन पहले भी गांव में दो बार अर्थिंग फेल होने के चलते घरेलू उपकरण जल गए थे। अब ट्यूबवेल की विद्युत सप्लाई बंद होने से किसानों की फसलें जल रही है, लेकिन विद्युत निगम अधिकारी उनकी समस्या को हल करने को लेकर गंभीर नहीं है।

किसान शिशपाल ओझा, राकेश भादू, जयसिंह बीका, जीतराम बिरड़ा, छगन ओझा, नरेश झोरड़, राकेश सिराव व ओम सिंह ने बताया कि क्षेत्र में तेज गर्मी पड़ रही है। पिछले दस दिन से ट्यूबवेल की बिजली सप्लाई बंद होने से उनकी फसलें झुलस गई। उन्होंने आरोप लगाया कि निगम की ढिलाई के चलते बिजली सप्लाई चालू नहीं हो पा रही है, जबकि ग्रामीण पोल लगाने में किसान पूरा सहयोग कर रहे हैं। निगम का कोई अधिकारी नही पहुंचने पर किसानों ने करीब आठ बजे कर्मचारी दलीप स्वामी कमरे में बंध कर दिया। धरना प्रदर्शन की सूचना मिलने पर शाम करीब साढ़े चार बजे सूरतगढ़ के तहसीलदार हाबूलाल मीना मौके पर पहुंचे, लेकिन किसान निगम अधिकारियों को बुलाने पर अड़ गए। इस पर सहायक अभियंता मुकेश शर्मा पुलिस जाब्ते के साथ बछरारा जीएसएस पहुंचे। तहसीलदार तथा विद्युत निगम के अधिकारियों तथा किसानों के बीच वार्ता हुई।

सहायक अभियंता ने बताया कि तेज आंधी से बड़ी संख्या में विद्युत पोल, डीपी व ट्रांसफर गिरे गए हैं। जिनको दुरस्त करने में समय लग रहा है। दूसरी ओर किसानों ने विद्युत निगम अधिकारियों की ओर से किसानों को फोन नहीं उठाने पर नाराजगी जताई। लापरवाही का आरोप लगाते हुए अधिकारियों को खरी-खोटी सुनाई। विद्युत निगम के एईएन ने तीन दिन में विद्युत सप्लाई सुचारु करने का आश्वासन दिया। इस पर किसानों ने सहमति जताने पर धरना समाप्त कर दिया।

धरने में भूराराम स्वामी, रामनिवास घिंटाला, ताराचंद सहारण, मदनदास सामोथा, मनीराम शर्मा, नत्थुराम स्वामी, भीमसेन नायक, भगवानदास, भागीरथ नायक, रणजीत गोदारा, आईदान मेघवाल व अन्य किसान शामिल रहे।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 17 जून, 2024

ज्येष्ठ मास, शुक्ल पक्ष, एकादशी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2081, चित्रा नक्षत्र दिन 1:50 तक, परिद्य योग रात्रि 9:34 तक, वणिज करण सांय 5:34 तक, चन्द्रमा आज तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-तुला, मंगल-मेष, बुध-मिथुन, गुरू-वृष, शुक्र-मिथुन, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज रवियोग दिन 1:50 तक है। भद्रा सांय 5:34 से आरम्भ होगी। आज निर्जला एकादशी व्रत है और ईद-उल-जुहा (बकरीद) है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: आज सूर्योदय से 7:19 तक, शुभ 9:02 से 10:45 तक, चर 2:10 से 3:53 तक, लाभ-अमृत 3:53 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 5:37, सूर्यास्त 7:18

मेष
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

वृष
मित्रों/रिश्तेदारों से चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। आय में वृद्धि होगी।

मिथुन
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक कार्यों पर धन खर्च हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के लिए यात्रा हो सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

सिंह
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी।

कन्या
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। परिवार में धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

तुला
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति में सुधार होगा। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में नियंत्रण बढ़ेगा।

वृश्चिक
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा।

धनु
आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

मकर
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

कुंभ
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। घर-परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

मीन
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा टालना ठीक रहेगा।